पतंग और गुब्बारा

(कहानी)

15

एक रंग-बिरंगी पतंग इतराती, बलखाती, मुस्कुराती आसमान में ऊँची उड़ रही थी। इतनी ऊँचाई पर अपने आपको देखकर वह फूली नहीं समा रही थी।

"वाह! मैं इतना ऊँचा उड़ सकती हूँ।" –यह सोचकर वह झूम उठी। उड़ते-उड़ते जब उसने नीचे झाँका, तो उसे बड़ी जोर से हँसी आ गई क्योंकि उसे नीचे खड़े सारे बच्चे छोटे-छोटे दिखाई दे रहे थे।

"वह रहा संदीप! देखो, मेरी डोर थामे जमीन पर खड़ा ऐसा लगता है मानों एक चींटा हो।" –खिलखिलाते हुए वह स्वयं से बोल उठी।

तभी उसे एक आवाज सुनाई पड़ी– "अरे! तुम अपनी ऊँचाई देखकर इतनी खुश क्यों हो? जानती हो, चींटा कहकर तुम जिसकी खिल्ली उड़ा रही हो, उसी के हाथ में तुम्हारी डोर है।"

पतंग ने पलटकर देखा। गैस से भरा एक गोल-मटोल गुब्बारा उड़ते-उड़ते उसके पास आ गया था। उसके धागे का दूसरा सिरा गुब्बारेवाले या किसी बच्चे के हाथ से छूट गया था। धागा नीचे लटका हुआ, हवा में झूल रहा था।

हँसते-हँसते पतंग बोली– "ओ गुब्बारे। पहले तुम अपनी कटी हुई पूँछ को तो देख लो। पूँछ यानी नीचे लटकता हुआ धागा हा ....हा....हा.... हा। हवा में ऐसे झूल रहा है; जैसे बेपेंदे का लोटा हो। हा ....हा....हा....हा।"

गुब्बारा बोला– "अरी पतंग रानी! जरा तुम ऊँचा उड़ लीं, तो अपना रंग दिखा रही हो? परंतु तुम्हारे ऊँचे उड़ने में तुम्हारा कोई कमाल नहीं है। कमाल तो है तुम्हारी पूँछ यानी डोर का जिससे तुम बँधी हो और जिसके सहारे तुम उड़ रही हो। मुझे तुम्हारी तरह किसी सहारे की जरूरत नहीं है। भले ही मेरी पूँछ कटी हो, पर उड़ तो अपने आप रहा हूँ न! ....हा....हा....हा।"

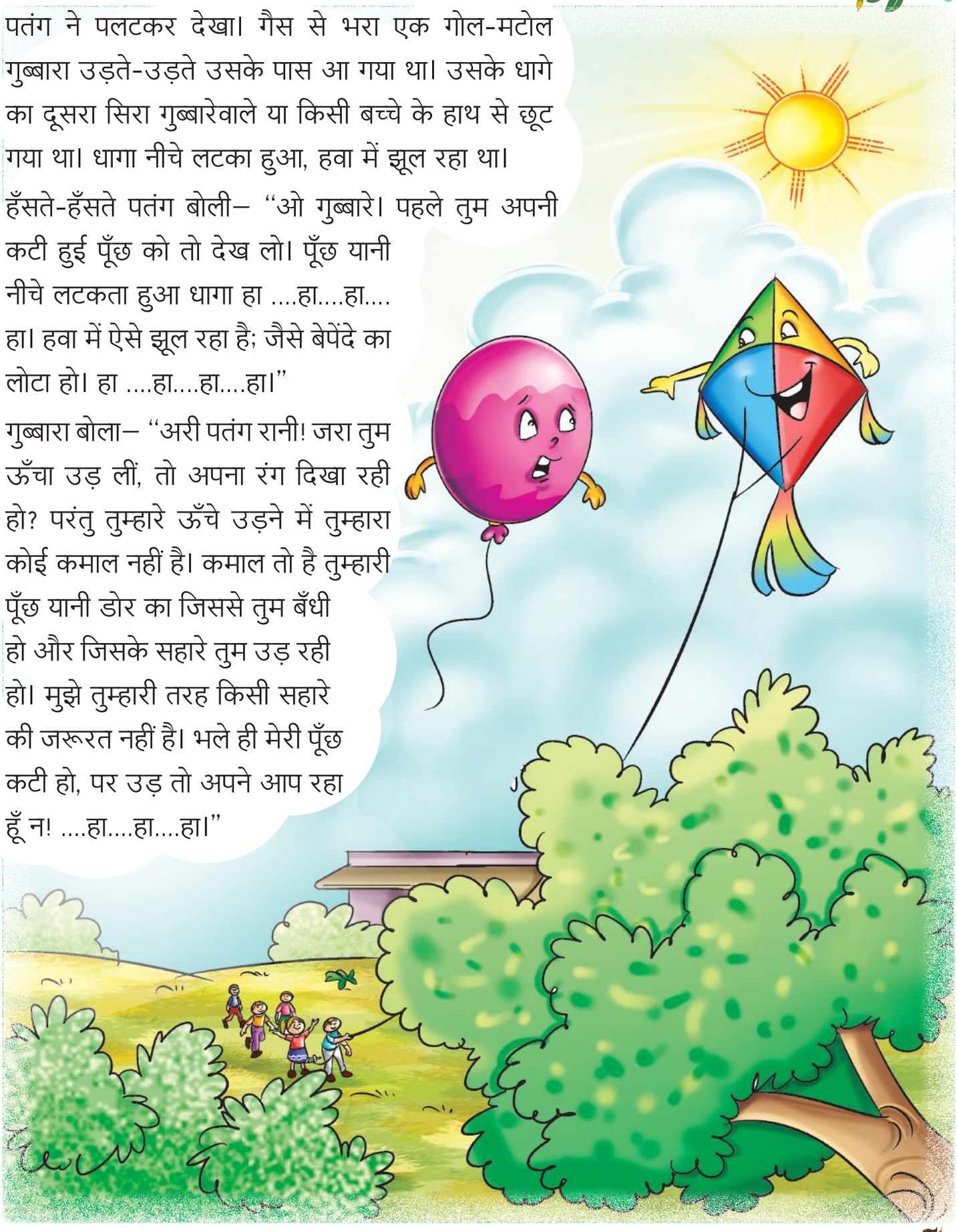

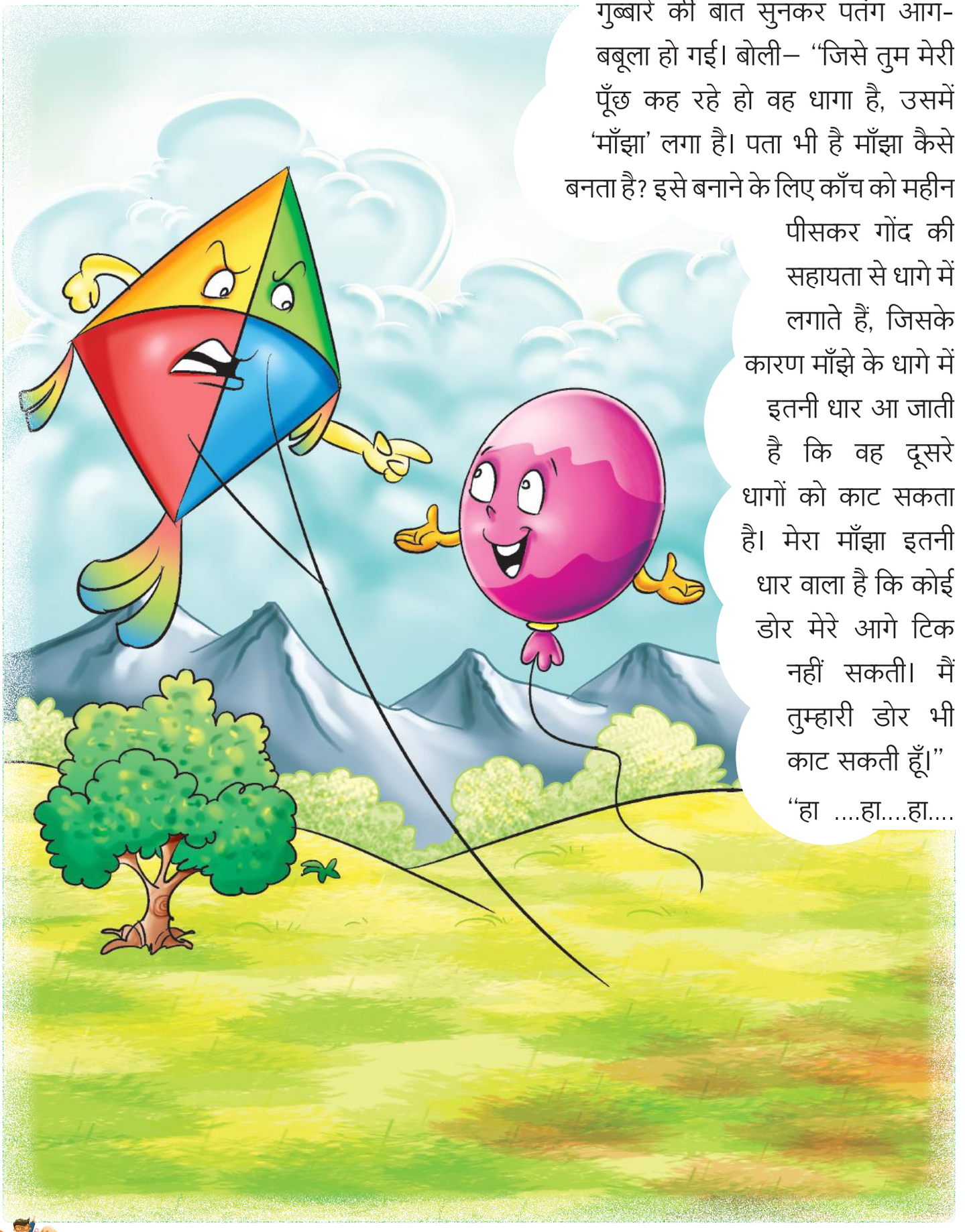
गुब्बारे की बात सुनकर पतंग आग-बबूला हो गई। बोली– "जिसे तुम मेरी पूँछ कह रहे हो वह धागा है, उसमें 'माँझा' लगा है। पता भी है माँझा कैसे बनता है? इसे बनाने के लिए काँच को महीन पीसकर गोंद की सहायता से धागे में लगाते हैं, जिसके कारण माँझे के धागे में इतनी धार आ जाती है कि वह दूसरे धागों को काट सकता है। मेरा माँझा इतनी धार वाला है कि कोई डोर मेरे आगे टिक नहीं सकती। मैं तुम्हारी डोर भी काट सकती हूँ।"
"हा ....हा....हा....

क्या तुम नहीं जानतीं कि किसी धागे को काटने के लिए दोनों धागों को तना हुआ होना चाहिए। मेरे धागे की तरह लटका हुआ नहीं। मेरी पूँछ कटी ही सही, पर तुम उसका बाल भी नहीं बाँका नहीं कर पाओगी क्योंकि वह तो हवा में झूल रही है।" गुब्बारे ने हँसकर अपना मुँह खोला।

पतंग चिढ़कर बोली– "तुम्हें भी ज्यादा डींग मारने की जरूरत नहीं है। जब तुम्हारी हवा निकल जाएगी, तो तुम भी भीगी बिल्ली बन जाओगे।"

गुब्बारा हँसकर बोला– "बहन! हम दोनों ही हवा पर निर्भर हैं। फर्क सिर्फ इतना है कि मेरे भीतर भरी गैस चारों ओर की हवा से हल्की है। इसलिए मैं हवा में वैसे ही तैर रहा हूँ जैसे पानी से हल्की चीज पानी में तैरने लगती है। पर तुम्हारे उड़ने के लिए भी हवा ही तुम्हारी मदद करती है।"

पतंग अभी भी हार मानने के लिए तैयार नहीं थी। बोली– "मैं कैसे विश्वास करूँ कि मुझे हवा उड़ाती है? मुझे तो वह डोर उड़ाती है जिसके सहारे मैं बँधी हूँ। उसका दूसरा सिरा तो नीचे खड़े संदीप के हाथ में है, जो झटके दे-दे कर मुझे उड़ा रहा है।"

गुब्बारा मुसकुराता हुआ बोला– "पर क्या तुम्हें पता है कि संदीप के झटके देने पर क्या होता है? हवा में हल्के और भारी दबाव के दो क्षेत्र बन जाते हैं जिसके कारण तुम्हें उड़ान लेने में मदद मिलती है।"

यह सुनकर पतंग सोच में पड़ गई।

गुब्बारा फिर बोला– "और जहाँ तक डोर का सवाल है, हम दोनों ही डोर से बँधे हैं। हम दोनों का उद्देश्य भी एक ही है– बच्चों को खुश करना। रंग-बिरंगी पतंग और हवा या गैस से भरे रंगीन गोल-मटोल गुब्बारे बच्चों को समान रूप से भाते हैं।"

पतंग बोली– "हाँ, गुब्बारे भाई! तुम बिलकुल ठीक कह रहे हो। मुझे समझ आ गया है कि मैं गलत थी।"

फिर दोनों खुश होकर आसमान में उड़ने लगे और हँस-हँसकर बातें करने लगे।

—डॉ० मधु पंत

शब्द-अर्थ

स्वयं — अपने आप *(self)*,
माँझा — पतंग की डोर जो काँच के पिसे लेप से बनी हो *(kite thread)*,
समान — बराबर *(equal)*।
सिर्फ — केवल *(only)*,
मदद — सहायता *(help)*,
फर्क — विश्वास *(believe)*,

अभ्यास

मौखिक

1. इन शब्दों को पढ़कर सुनाइए–

इतराती	ऊँचाई	खिल्ली	गुब्बारा	जरूरत	माँझा
डींग	विश्वास	उद्देश्य	रूप	दबाव	क्षेत्र

2. निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–

(क) पतंग चींटा कहकर किसकी खिल्ली उड़ा रही थी?

(ख) पतंग किसके सहारे उड़ती है?

(ग) हवा में हल्के और भारी दबाव के कितने क्षेत्र बन जाते हैं?

लिखित

1. सही उत्तर पर (✓) का निशान लगाइए–

(क) गुब्बारा किससे भरा था?

☐ गैस से ☐ पानी से ☐ तेल से

(ख) पतंग और गुब्बारा किससे बँधे होते हैं?

☐ हवा से ☐ गैस से ☐ डोर से

(ग) माँझा बनाने के लिए किसको महीन करके पीसा जाता है?

☐ मोम को ☐ रबड़ को ☐ काँच को

2. सही शब्दों के द्वारा वाक्य पूरे कीजिए–

(क) एक रंग-बिरंगी ..... आसमान में उँची उड़ रही थी। (गुब्बारा/पतंग)

(ख) पानी से ..... चीज पानी में तैरने लगती है। (हल्की/भारी)

(ग) मेरे भीतर भरी ..... चारों ओर की हवा से हल्की है। (हवा/पानी)

(घ) हवा में हल्के और भारी दबाव के ..... क्षेत्र बन जाते हैं। (तीन/दो)

3. पाठ के आधार पर गलत शब्द को ठीक करके दोबारा लिखिए–

(क) हम दोनों ही आकाश पर निर्भर हैं।

.....

(ख) पानी से भारी चीज पानी में तैरती हैं।

.....

(ग) हम दोनों ही गैस से बँधे हैं।

.....

(घ) दोनों खुश होकर शहर में उड़ने लगे।

.....

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) पतंग स्वयं को ऊँचाई पर देखकर क्यों खुश हो रही थी?

(ख) पतंग गुब्बारे पर क्यों हँसी?

(ग) माँझा कैसे बनाया जाता है?

(घ) गुब्बारे की कौन-सी बात सुनकर पतंग आग-बबूला हो गई?

(ङ) गुब्बारे ने ऐसा क्यों कहा कि हम दोनों ही हवा पर निर्भर हैं?

भाषा-ज्ञान

1. प्रत्येक पंक्ति में बेमेल शब्द पर गोला ◯ लगाइए–

(क)	आसमान	-	गगन	रवि	नभ	आकाश
(ख)	हवा	-	पवन	समीर	चंचला	वायु
(ग)	पानी	-	वारि	नीर	जल	मेघ
(घ)	जमीन	-	भूमि	दामिनी	धरती	पृथ्वी

2. नीचे दिए गए शब्दों को स्वर और व्यंजन के क्रम के अनुसार लिखिए–

भीगी बिल्ली बनना, डींगें मारना, बाल भी बाँका न होना, फूला न समाना

(क) कक्षा में प्रथम स्थान पाकर अंकिता ..... ।

(ख) पुलिस को देखकर चोर ..... ।

(ग) अपनी बहादुरी की ..... वाला महेश, बिल्ली को देखकर डर गया।

(घ) अमन ने रमेश को सजा दिलाने की बहुत कोशिश की, पर वह उसका ..... न कर सका।

3. पानी से हल्की चीज पानी पर तैरने लगती है। ऐसी छह चीजों और वाहनों के नाम लिखिए, जो पानी पर तैरते हैं।

....

....

4. सही शब्द चुनकर खाली जगह भरिए–

(क) एक रंग-बिरंगी पतंग ऊँची ..... रही थी।

प्रियांशी किताब ..... रही थी। (उड़/पढ़)

(ख) उसे एक आवाज सुनाई ..... ।

अक्षिता अमन की ..... बहन है। (बड़ी/पड़ी)

(ग) संदीप नीचे ..... है।

मैं धीरे-धीरे पहाड़ पर ..... । (खड़ा/चढ़ा)

क्रियात्मक गतिविधि

- यदि आपके सामने कोई पतंग की तरह डींग मार रहा हो, तो आप उसे कैसे समझाएँगे?
- किसी का उपहास क्यों नहीं उड़ाना चाहिए?
- हम सब एक-दूसरे की मदद से ही आगे बढ़ते हैं। इस पर अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।